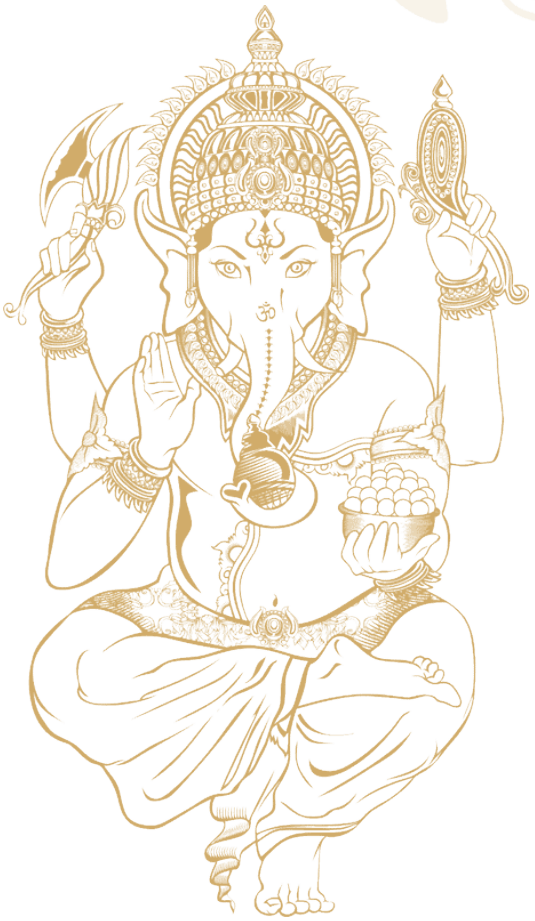

R

N

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120908607

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/08/1999	जन्म तिथि	10/03/2001
शनिवार	दिन	शनिवार
घंटे 11:25:00	जन्म समय	09:09:00 घंटे
घटी 13:47:47	जन्म समय(घटी)	06:07:48 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Sikar
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	27:51:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:14:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:29:04 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:53:53	सूर्योदय	06:44:35
19:10:36	सूर्यास्त	18:34:33
23:50:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:09

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 6वर्ष 6मा 29दि		02:43:00	तुला	लग्न	मेष	14:00:32	सूर्य 3वर्ष 8मा 22दि	
गुरु		20:27:37	कर्क	सूर्य	कुंभ	25:45:36	राहु	
07/03/2024		24:07:46	वृष	चंद्र	कन्या	01:43:04	30/11/2021	
07/03/2040		20:43:40	तुला	मंगल	वृश्चिक	17:41:00	01/12/2039	
गुरु	25/04/2026	04:48:07	कर्क	बुध	मक	28:19:46	राहु	13/08/2024
शनि	05/11/2028	10:37:01	मेष	गुरु	वृष	10:22:23	गुरु	06/01/2027
बुध	11/02/2031	09:58:13	सिंह व	शुक्र व	मीन	23:50:06	शनि	12/11/2029
केतु	18/01/2032	22:52:35	मेष	शनि	वृष	01:56:52	बुध	01/06/2032
शुक्र	18/09/2034	19:06:38	कर्क	राहु व	मिथु	19:16:11	केतु	19/06/2033
सूर्य	07/07/2035	19:06:38	मक	केतु व	धनु	19:16:11	शुक्र	19/06/2036
चन्द्र	05/11/2036	20:59:21	मक व	हर्ष	मक	28:33:45	सूर्य	14/05/2037
मंगल	12/10/2037	08:48:32	मक व	नेप	मक	13:54:37	चन्द्र	12/11/2038
राहु	07/03/2040	13:55:39	वृश्चिक व	प्लूटो	वृश्चिक	21:23:32	मंगल	01/12/2039

लग्न-चलित

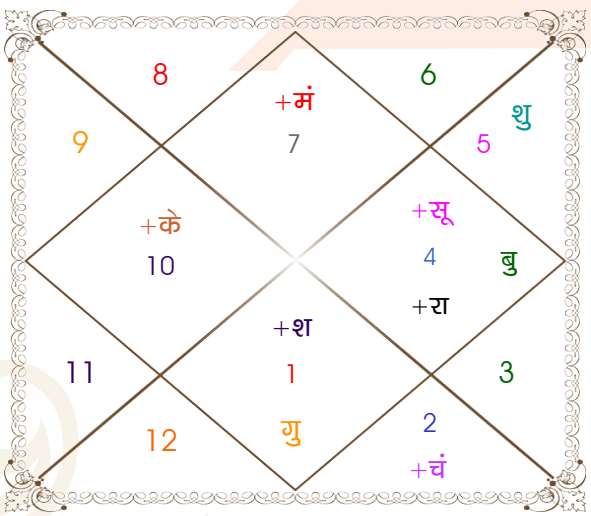

लग्न-चलित

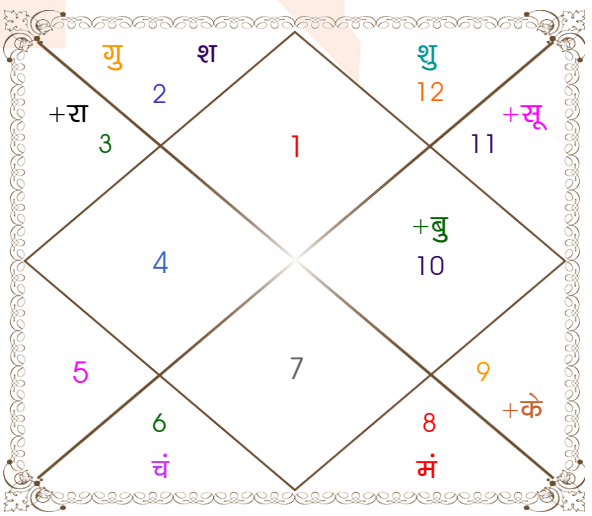

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	गौ	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	कन्या	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

R का वर्ग मृग है Rाथा N का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार R और N का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

R मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

N मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल N कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु N कि कुण्डली में Rृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

R तथा N में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।